

ज्ञानमीमांसीय अवज्ञा: औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति का पहला चरण

भूमिका: मन की संरचना

उपनिवेशवाद की सबसे स्थायी विरासत केवल राजनीतिक सीमाएँ या आर्थिक व्यवस्थाएँ नहीं हैं, बल्कि यह मानव मस्तिष्क में गहराई से बसी एक संरचना है। सदियों से, पश्चिमी विस्तारवाद के इस प्रयास को एक अदृश्य, लेकिन प्रभावशाली शक्ति ने वैधता दी – यह अपनी ज्ञान-पद्धति, तर्कशक्ति और विश्वदृष्टिकोण को मानवता की सर्वोच्च उपलब्धि मानने का था; एक ऐसा मानक, जिसके सामने अन्य संस्कृतियों को तुच्छ साबित किया जा सके। बीसवीं सदी के मध्य में साम्राज्यों का भौतिक विघटन एक ऐतिहासिक राजनीतिक उपलब्धि थी, लेकिन इस गहरी बौद्धिक संरचना को यह नहीं छू सका। आज भी, पश्चिमी उदारवादी व्यवस्था, जिसके मूल में व्यक्तिवाद, प्रगति और धर्मनिरपेक्ष तर्क है, वैश्विक मामलों, शिक्षा और आत्म-धारणा पर अपना प्रभाव बनाए रखती है।

सार्वभौमिकता का वर्चस्व: पश्चिम ने वास्तविकता पर कैसे दावा किया

ज्ञानमीमांसीय अवज्ञा की आवश्यकता को समझने के लिए सर्वप्रथम पश्चिम की ज्ञान-संबंधी परियोजना की चमक-दमक और हिंसक प्रकृति को समझना आवश्यक है। ज्ञानमीमांसा (Epistemology) ज्ञान का वह सिद्धांत है जो एक मूलभूत प्रश्न से जुड़ा है: "हम जानते क्या हैं और कैसे जानते हैं?" यूरोप में 17वीं और 18वीं शताब्दी में घटित हुई नवजागरण कालीन आंदोलन (Enlightenment) ने इसका एक शक्तिशाली और विशिष्ट उत्तर दिया: तर्क, प्रयोगसिद्ध साक्ष्य और वैज्ञानिक पद्धति के माध्यम से। यह यूरोपीय संदर्भ में एक क्रांतिकारी विकास था, जिसने चर्च की रूढ़िवादिता को झकझोरा और अद्भुत वैज्ञानिक व राजनीतिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया। यह एक समस्या है, लेकिन यह अनुवाद और आरोपण की भी बात करता है। ज्ञान प्राप्त करने का यह खास तरीका, जो

सिंटू कुमार, राजनीति विज्ञान विशेष
तृतीय वर्ष, देशबंधु महाविद्यालय

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, इसे कई संभावित रास्तों में से एक के रूप में नहीं पेश किया गया। इसके बजाय, इसे 'सत्य' तक पहुँचने का 'सार्वभौमिक' रास्ता मान लिया गया। इसने एक ऐसा विचार उत्पन्न किया जिसे दार्शनिक बोवेंतुरा दि सूसा सांतोस "अथाह चिंतन" (Abyssal Thinking) कहते हैं – अदृश्य रेखाओं की एक प्रणाली जो दुनिया को दो हिस्सों में बांटती है: "रेखा के इस पार" और "रेखा के उस पार"। "इस पार" में वैध ज्ञान – वैज्ञानिक, तार्किक, आधुनिक – का वास है। "उस पार" में बाकी सब कुछ है: विश्वास, राय, जादू-टोना, परंपरा, स्वदेशी ज्ञान – जिन्हें अक्सर तुच्छ या हीन समझा जाता है। यह 'वैचारिक हिंसा' (Epistemic Violence) उपनिवेशवाद का केवल एक दुष्प्रभाव नहीं, बल्कि इसका एक मुख्य उपकरण था। अगर पश्चिम वास्तविकता, इतिहास और मानवता की परिभाषाओं पर नियंत्रण हासिल कर लेता, तो उसके "सभ्य बनाने के मिशन" को सही ठहराया जा सकता था। महाद्वीपों का मानचित्रण, वनस्पतियों और जीवों का लिनेयन प्रणाली के तहत वर्गीकरण, समय का रेखीय और 'प्रगतिशील' इतिहास (प्राचीन, मध्यकालीन, आधुनिक) में विभाजन, और जटिल आध्यात्मिक अवधारणाओं का यूरोपीय भाषाओं की सीमित शब्दावली में अनुवाद – ये सभी ज्ञान-संबंधी विजय के कार्य थे। इन्होंने वैकल्पिक 'विश्व-रचना' के तरीकों को व्यवस्थित रूप से अमान्य कर दिया। ऑस्ट्रेलिया के आदिवासियों की 'ड्रीमटाइम' – जो भूमि, नियम और पहचान को हजारों वर्षों से जोड़ने वाला एक गहरा दार्शनिक और आध्यात्मिक

ढाँचा है – अब बस एक "मिथक" बनकर रह गया है। माया सभ्यता के जटिल खगोलीय और कृषि संबंधी ज्ञान को "आदिम अंधविश्वास" कहकर खारिज कर दिया गया। इस तरह, उपनिवेशित लोग न केवल भौतिक स्थानों में, बल्कि एक ऐसी वैचारिक वास्तविकता में भी फंस गए, जहाँ उनके अपने ज्ञान के तरीके अवैध ठहरा दिए गए, यहाँ तक कि उनके अपने लिए भी।

ज्ञानमीमांसीय अवज्ञा: एक मौलिक असहमति

ज्ञानमीमांसीय अवज्ञा उस बौद्धिक बंदीगृह से निकलने की एक सचेत और निरंतर प्रक्रिया है। इसका मतलब यह नहीं है कि हम पश्चिमी ज्ञान को पूरी तरह से नकार दें; यह तो एक द्विआधारी सोच होगी, जो औपनिवेशिक तर्क का ही एक प्रतिबिंब है, जिससे हम मुक्त होना चाहते हैं। असल में, यह "विच्छेदन" (Delinking) है। मिग्नोलो के अनुसार, विच्छेदन का मतलब है अपने घर का वर्णन करने के लिए स्वामी के औजारों का उपयोग करना बंद करना। इसका तात्पर्य है कि हमें यह समझना होगा कि पश्चिमी ज्ञान-व्यवस्था सार्वभौमिक नहीं है, बल्कि यह एक स्थानिक परंपरा है, जो एक विशिष्ट इतिहास की उपज है, और इसकी अपनी सीमाएँ और दोष हैं।

यह अवज्ञा एक बौद्धिक असहमति है। यह ऐसे सवाल उठाती है जिनका जवाब देने में प्रभावशाली व्यवस्था असमर्थ है:

- क्यों यूनानी दर्शन को सभी दार्शनिक विचारों का आधार माना जाता है, जबकि भारत, अफ्रीका और कोलंबस-पूर्व अमेरिका के समृद्ध दार्शनिक चिंतन को "नृवंशविज्ञान" या "धर्म" की श्रेणी में डाल दिया जाता है?
- क्यों ज्ञान का सर्वोच्च मानक एक अंग्रेजी पत्रिका में प्रकाशित शोध-आलेख को माना जाता है, जबकि हजारों वर्षों से परंपराओं को संजोए रखने वाले किसी बुजुर्ग की मौखिक परंपराएँ उस मानक में नहीं आतीं?
- आर्थिक विकास को सिर्फ सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि से क्यों मापा जाता है, जो कि एक मात्रात्मक माप है? जबकि सामुदायिक कल्याण, पारिस्थितिक संतुलन और आध्यात्मिक पूर्णता जैसे गुणात्मक मापों को

नजरअंदाज किया जाता है?

ज्ञानमीमांसीय अवज्ञा वह "नहीं" है जो एक नए "हाँ" से पहले आती है। यह एकविसर्जन (Unlearning) है, जो किसी भी नए सीखने (Relearning) से पहले जरूरी है। यह एक ऐसा बौद्धिक स्थान बनाती है जो दबे-कुचले और उपेक्षित ज्ञान के पुनरुद्धार, पुनर्मूल्यांकन और पुनर्जीवन का मौका देती है।

अवज्ञा के रूप: सिद्धांत से जीवन-प्रवाह तक

ज्ञानमीमांसीय अवज्ञा का सिद्धांत अपनी व्यावहारिक उपयोगिता की विस्तृत श्रृंखला में छिपी हुई ताकत रखता है। यह सिर्फ एक बौद्धिक चर्चा नहीं है, बल्कि एक जीवंत और गतिशील प्रक्रिया है जो शिक्षा, कला, कृषि, और शासन जैसे विभिन्न क्षेत्रों को नए सिरे से परिभाषित करती है।

1. शिक्षा के क्षेत्र में: पाठ्यक्रम का उपनिवेश-विरोध विश्वविद्यालय लंबे समय से पश्चिमी ज्ञान के वर्चस्व को बढ़ावा देने का एक प्रमुख केंद्र रहा है। यहाँ ज्ञानमीमांसीय अवज्ञा का मतलब है कि हमें यह मूलभूत रूप से पुनः परिभाषित करना होगा कि "मूलभूत ज्ञान" किसे माना जाए। यह सिर्फ कुछ गैर-पश्चिमी पाठ्य सामग्री को पाठ्यक्रम में जोड़ने जैसा नहीं है। इसके लिए पाठ्यक्रम की प्रकृति पर गहराई से पुनर्विचार करना जरूरी है। इसमें शामिल है:

- यूरोप को स्थानीय बनाना (Provincializing Europe): पश्चिमी विचारधारा को मानव बौद्धिक इतिहास की एकमात्र कहानी के बजाय एक महत्वपूर्ण, लेकिन क्षेत्रीय परंपरा के रूप में स्थापित करना। उदाहरण के लिए, राजनीतिक सिद्धांत का एक पाठ्यक्रम केवल प्लेटो और हॉब्स से ही नहीं, बल्कि हौडेनोशौनी (Iroquois) संघ और अमेरिकी लोकतंत्र पर उनके प्रभाव, या अशांति साम्राज्य की जटिल राजनीति से भी शुरू हो सकता है।
- बहुभाषावाद को अपनाना: अंग्रेजी, फ्रेंच और

स्पेनिश की वर्चस्ववादी भूमिका को चुनौती देना, जो अक्सर विद्वतापूर्ण विमर्श की एकमात्र भाषाएँ मानी जाती हैं। इसमें स्थानीय भाषाओं के अध्ययन और उपयोग को बढ़ावा देना शामिल है, यह समझते हुए कि कुछ अवधारणाएँ अनूदित नहीं हो सकतीं और भाषा स्वयं वास्तविकता को विशिष्ट तरीकों से आकार देती है।

•विविध ज्ञान-रचयिताओं का मूल्यांकन: यह समझना जरूरी है कि किसी ग्रामीण गाँव की दादी के पास स्थानीय जैव विविधता का जो ज्ञान है, वह एक विदेश-प्रशिक्षित कृषि वैज्ञानिक से कहीं ज्यादा गहरा हो सकता है। और इस ज्ञान का उपयोग पारिस्थितिक संकटों के समाधान में बेहद महत्वपूर्ण और आवश्यक है।

2.भाषा और कला में: अभिव्यक्ति के माध्यम से पुनर्विश्वरचना भाषाज्ञानमीमांसा की मुख्य वाहक है। अक्सर, उपनिवेशवाद ने स्थानीय भाषाओं को दबाया और यूरोपीय भाषाओं को थोपा। इस क्षेत्र में ज्ञानमीमांसीय अवज्ञा, स्वदेशी भाषाओं के सक्रिय पुनर्दावे और आधुनिकीकरण का कार्य है। यह न्गुगी वा थियोगो जैसे लेखकों का कार्य है, जिन्होंने अंग्रेजी में लिखने के एक सराहनीय करियर के बाद, केवल अपनी मातृभाषा गिकुयू में लिखने का संकल्प लिया। यह संचार का परित्याग नहीं, बल्कि इस बात की पुष्टि है कि उपनिवेशवादी की भाषा की वैचारिक सीमाओं के बाहर सोचने और रचना करने पर ही वास्तविक मुक्ति संभव है। कला में ज्ञानमीमांसीय अवज्ञा का मतलब है पश्चिमी सौंदर्यशास्त्र की श्रेणियों और कला इतिहास द्वारा निर्धारित रेखीय कथाओं को नकारना। यह पारंपरिक रूपांकनों को आधुनिक माध्यमों के साथ इस तरह मिलाना है कि एक नई दृश्य भाषा का निर्माण हो, जो उपनिवेश-विरोधी भविष्य को दर्शाती है। नाटक, फिल्म और संगीत ऐसी कहानियों को व्यक्त करते हैं जो उपनिवेशित लोगों पर थोपे गए रूढ़िवादी आख्यानो को अस्वीकार करते हैं और जटिल, स्व-परिभाषित पहचानों को उजागर करते हैं।

3.पारिस्थितिकी और अर्थशास्त्र में: संबंधात्मकता को अपनाना ज्ञानमीमांसीय अवज्ञा की सबसे स्पष्ट अभिव्यक्ति हमारे प्रकृति के साथ संबंध में देखी जा सकती है। पश्चिमी उदारवादी व्यवस्था, जो डेकार्ट्स के

द्वैतवाद – मन और शरीर, मानवता और प्रकृति को अलग करने वाले दर्शन – पर आधारित है, ने एक शोषणकारी और विनाशकारी आर्थिक मॉडल को जन्म दिया है। ज्ञानमीमांसीय अवज्ञा, स्वदेशी और गैर-पश्चिमी ज्ञान-पद्धतियों की ओर देखती है, जो संबंधात्मकता, पारस्परिकता और संतुलन पर जोर देती हैं। आओटेआरोआ (न्यूजीलैंड) में, व्हांगानुई नदी को एक जीवित इकाई और कानूनी व्यक्तित्व का दर्जा देना, ज्ञानमीमांसीय अवज्ञा की एक गहरी अभिव्यक्ति है। यह माओरी ज्ञान-पद्धति की एक शानदार जीत है, जो नदी को एक पूर्वज के रूप में देखती है, जबकि पश्चिमी दृष्टिकोण इसे केवल स्वामित्व और शोषण की वस्तु मानता है। इसी तरह, एंडीज पर्वतमाला के स्वदेशी समुदायों से निकला 'बुएन विविर' (Buen Vivir) या 'श्रेष्ठ जीवन', पूँजीवादी विकास के लिए एक महत्वपूर्ण विकल्प पेश करता है। अनंत आर्थिक विकास के विचार से परे, यह सामुदायिक कल्याण और प्रकृति के साथ सामंजस्य पर जोर देता है। इस तरह, यह विकास का एक गुणात्मक रूप से अलग – न कि केवल मात्रात्मक रूप से – मॉडल प्रस्तुत करता है।

4.चिकित्सा और स्वास्थ्य में: समग्रता की ओर लौटना उपनिवेशवाद ने स्थानीय चिकित्सा पद्धतियों, जड़ी-बूटियों के ज्ञान और समग्र स्वास्थ्य दृष्टिकोणों को 'अनैज्ञानिक' करार दिया। ज्ञानमीमांसीय अवज्ञा इन पद्धतियों के पुनर्मूल्यांकन और एकीकरण की आवश्यकता को उजागर करती है। यह आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध और विभिन्न आदिवासी चिकित्सा प्रणालियों में छिपे गहरे ज्ञान को मान्यता देती है, जो शरीर, मन और आत्मा के बीच के संबंध पर जोर देती हैं। यह रोग के इलाज के बजाय स्वास्थ्य के संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करती है और पर्यावरण व जीवनशैली को स्वास्थ्य का एक अनिवार्य हिस्सा मानती है। यह पश्चिमी

विच्छेदन: चुनौतियाँ और जटिलताएँ

ज्ञानमीमांसीय अवज्ञा का रास्ता कभी भी आसान नहीं होता। इसमें कई आंतरिक और बाहरी चुनौतियाँ होती हैं, जिन्हें स्वीकार करना बेहद जरूरी है।

• मूलनिवासी संकीर्णता (Nativism) और आदर्शवाद (Essentialism) का खतरा: पूर्व-औपनिवेशिक पहचानों को जल्दी से पुनः अधिकार में लेने के प्रयास में अतीत का आदर्शीकरण करना और एक शुद्ध, स्थिर संस्कृति की कल्पना करना एक बड़ा जोखिम है, जो वास्तव में कभी अस्तित्व में नहीं रही। संस्कृति हमेशा गतिशील रही है और यह आदान-प्रदान से प्रभावित होती रही है। ज्ञानमीमांसीय अवज्ञा का उद्देश्य नए कट्टरवाद का निर्माण करना नहीं, बल्कि मुक्ति प्राप्त करना होना चाहिए।

• अंतराल की समन्वय स्थिति (Navigating the "In-Between" Space): उत्तर-औपनिवेशिक विश्व के बहुत से लोग एक तरह के संकर स्थान में रहते हैं। वे पश्चिमी शिक्षा और अपनी सांस्कृतिक विरासत, दोनों का मिश्रण हैं। विच्छेदन का मतलब यह नहीं है कि हम इस जटिलता को मिटा दें या यह दिखाएं कि पश्चिम का प्रभाव कभी था ही नहीं। बल्कि, यह एक ऐसी आलोचनात्मक सोच विकसित करने के बारे में है जो दोनों दुनियाओं में मार्गदर्शन कर सके, दोनों से सीख सके, लेकिन किसी एक के प्रति बंधा न रहे।

• भौतिक बाधाएँ: जब कोई व्यक्ति अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहा होता है, तो ज्ञानमीमांसीय अवज्ञा एक तरह की अव्यावहारिक विलासिता लग सकती है। जब भोजन, पानी और सुरक्षा की कमी हो, तो ज्ञान के उपनिवेश-विरोध पर ध्यान कैसे केंद्रित किया जा सकता है? ये सभी संघर्ष एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। वही तर्क जो स्वदेशी ज्ञान को कमतर आंकता है, वह भूमि अधिग्रहण और संसाधनों के दोहन को भी बढ़ावा देता है, जो अंततः गरीबी का कारण बनता है। वैचारिक मुक्ति, भौतिक मुक्ति का एक अनिवार्य हिस्सा होनी चाहिए।

उपसंहार: बौद्धिक मुक्ति का अधूरा प्रकल्प

पश्चिमी उदारवादी व्यवस्था का विघटन एक विशाल कार्य है, जो राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक – कई मोर्चों पर चल रहा है। इनमें से कोई भी पूरी तरह से सफल नहीं हो सकता, जब तक कि ज्ञान के क्षेत्र में एक क्रांति न हो।

ज्ञानमीमांसीय अवज्ञा इस क्रांति का पहला और अनिवार्य कदम है। यह हमारी वास्तविकता की नींव पर सवाल उठाने, हमें बंधक बनाए रखने वाले सार्वभौमिकता के मिथकों को तोड़ने और उन अन्य जीवन-पद्धतियों की गूँज सुनने का व्यक्तिगत और सामूहिक साहस है, जिन्हें व्यवस्थित रूप से दबा दिया गया था।

यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो कभी खत्म नहीं होती – विसर्जन और पुनः अधिगम का एक जीवनभर का अभ्यास। जब हम इस अभ्यास में शामिल होते हैं, तो हम सिर्फ अतीत की आलोचना नहीं करते; बल्कि एक बहुस्वरूपी (Pluriversal) भविष्य के निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। हम उस दुनिया से आगे बढ़ते हैं, जहाँ केवल एक ही वास्तविकता संभव नहीं है – जिसे एक शक्तिशाली कहानी द्वारा नियंत्रित किया जाता है – बल्कि उस दुनिया की ओर बढ़ते हैं जहाँ "अनेक विश्व समा सकते हैं", जैसा कि मेक्सिको के जापातिस्ता कहते हैं।

यह 'मन के नए सिरे से गढ़ने' का काम किसी संधि या नीति से नहीं, बल्कि हमारे अपने विद्रोही मनों के शांत और विद्रोही कोनों से शुरू होता है। यह विकेन्द्रीयता की लंबी यात्रा की ओर पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम है।